तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ. पू.)
कोलकाता

HEADQUARTERS
COAST GUARD REGION NORTH EAST

हिंदी पत्रिका सजल

सजल अंक - 5

भारतीय तटरक्षक
HEADQUARTERS COAST GUARD REGION (NORTH EAST)
50वां
स्थापना दिवस
2026
50 वर्षों की गौरवशाली यात्रा

INDIAN COAST GUARD
HEADQUARTERS COAST GUARD REGION (NORTH EAST)
50th
RAISING DAY
2026
50 Years of Glorious Journey

प्रकाशक

मुख्यालय
तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पूर्व)
6वाँ तल, सिंथेसिस बिजनेस पार्क
न्यू टाउन राजरहाट
कोलकाता -700161

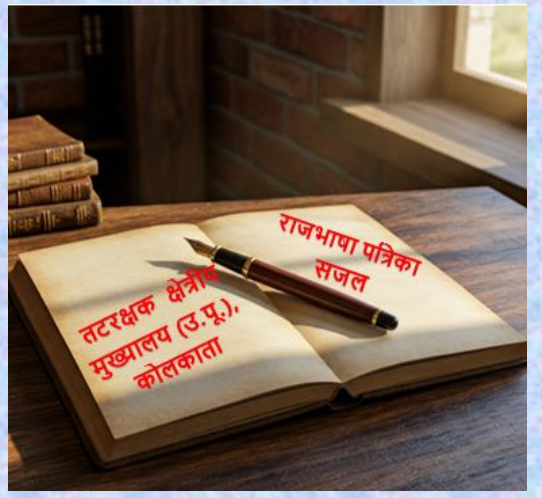

संपादक - मंडल

उप महानिरीक्षक महेन्द्र सिंह रावत
मुख्य स्टाफ अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशासनिक)

श्री आलोक कुमार राय
असैन्य कार्मिक अधिकारी
क्षेत्रीय हिन्दी अधिकारी

सुश्री एकता गुप्ता
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, रा.त.प., त.प.
कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

संदेश

राजभाषा हिंदी हमारे संगठन की कार्य संस्कृति की आत्मा है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त साधन है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारी हिंदी पत्रिका का यह नवीन अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस वर्ष तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) ने अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जो हम सभी के लिए गर्व का विषय है। यह सफलता हमारे कर्मचारियों की लगन, प्रतिबद्धता और टीम भावना का प्रतिफल है। ऐसे में इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपनी उपलब्धियों का दस्तावेज़ तैयार कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की प्रेरणा का स्रोत भी निर्मित कर रहे हैं।

भविष्य में हमारा लक्ष्य है कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग डिजिटल प्लेटफार्म, तकनीकी दस्तावेज़ों एवं प्रशासनिक कार्यों में सुनिश्चित किया जाए ताकि राजभाषा हिंदी, व्यवहार में और अधिक सशक्त रूप से स्थापित हो सके।

इस पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत विचार, लेख एवं रचानाएँ निश्चय ही हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को और मजबूत करेंगी। मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को इस प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

(इकबाल सिंह चौहान)
महानिरीक्षक
कमांडर
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

उप महानिरीक्षक हिमांशु नौटियाल, त.प.
स्टाफ प्रमुख

संदेश

राजभाषा हिंदी, संविधान द्वारा प्रदत्त गौरवशाली स्थान के साथ-साथ हमारे संगठन की पहचान और कार्य-कुशलता का महत्वपूर्ण आधार है। हिंदी के प्रयोग से न केवल कार्य में स्पष्टता आती है, बल्कि जनसंपर्क एवं प्रशासनिक पारदर्शिता भी सुदृढ़ होती है।

यह हर्ष का विषय है कि वर्तमान समय में संगठन में हिंदी के प्रयोग की स्थिति निरंतर सुदृढ़ हो रही है। अधिकारी एवं कार्मिक हिंदी में कार्य करने के प्रति जागरूक एवं सक्रिय दिखाई दे रहे हैं, जो प्रशंसनीय है।

भविष्य में हमारा उद्देश्य है कि हिंदी को केवल औपचारिक दायरे तक सीमित न रखते हुए नवाचार, प्रबंधन, तकनीकी एवं डिजिटल कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाए। इसके लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता आवश्यक है।

हिंदी पत्रिका 'सजल' का अंक-5, राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आशा है कि यह सभी पाठकों को प्रेरित करेगा और हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करेगा।

हिमांशु

(हिमांशु नौटियाल)
उप महानिरीक्षक
स्टाफ प्रमुख
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

सम्पादक
की कलम से

उप महानिरीक्षक महेन्द्र सिंह रावत
मुख्य स्टाफ अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशासनिक)

हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भावों, विचारों और संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है। हमारी हिंदी पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के महत्व को उजागर करना तथा संगठन में इसके प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।

हिंदी पत्रिका 'सजल' अंक-5 में सम्मिलित लेख, कविताएँ एवं विचार यह दर्शाते हैं कि संगठन में हिंदी के प्रति जागरूकता निरंतर बढ़ रही है। रचनाकारों ने न केवल हिंदी भाषा की समृद्धि को प्रस्तुत किया है, बल्कि इसके व्यावहारिक प्रयोग पर भी प्रकाश डाला है।

भविष्य में पत्रिका को और अधिक सशक्त, समसामयिक बनाने का प्रयास रहेगा, ताकि अधिक से अधिक पाठक हिंदी से जुड़ सकें और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें।

सभी लेखकों, मार्गदर्शकों एवं पाठकों का सहयोग इस पत्रिका की प्रेरणा है। हमें विश्वास है कि यह प्रयास राजभाषा हिंदी को संगठन की कार्यसंस्कृति में और अधिक सुदृढ़ करेगा।

(महेन्द्र सिंह रावत)
उप महानिरीक्षक
मुख्य स्टाफ अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशासनिक)
तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	तटरक्षक की पुकार	1
2	पेड़	2
3	उम्मीद से बढ़ा चल नाविक	3
4	एक सैनिक की व्यथा	4
5	भारतीय तटरक्षक – भारत की एक समुद्री धरोहर	5
6	भाषागत विवाद राष्ट्रीय एकता के लिए घातक	6
7	मछुआरों का उनके परिवार के साथ पुनर्मिलन	7
8	मिट्टी की खुशबू	8
9	बांग्लादेशी मछली पकड़ने वाली नौका 'मायर दोया' पकड़ी गई 13 मछुआरे गिरफ्तार	9
10	प्रकृति का जीवन संदेश	10
11	इम्तिहान	11
12	मतदान का महत्व	12
13	हालात	13
14	गुमनाम	14
15	नीला सागर, जीवन का आधार	15
16	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की विभिन्न गतिविधियाँ	16-29
17	तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की झलकियाँ	30-37

तटरक्षक की पुकार

ऐ के यादव, नाविक (ए एल)
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर

हम हैं भारत के रखवाले,
लहरों से जो ना घबराएँ।
तूफ़ानों से जूझें हर पल,
सीना ताने आगे बढ़ जाएँ।

सागर हमारा, गर्व हमारा,
इसकी सफ़ाई धर्म हमारा।
ना कचरा, ना तेल की लकीर,
स्वच्छ समुद्र ही असली तस्वीर ।

जब सूरज डूबे, जब जग सोए,
तटरक्षक तब भी पहरा दें।
नावों में भरकर साहस अपार,
रखते हैं सीमाओं का मान-सम्मान।

चलो हम भी उनका साथ निभाएँ,
सागर को निर्मल रूप दिलाएँ।
"स्वच्छ सागर – सुरक्षित तट,"
भारत की यही शान और पट।

लहरों से गूँजे एक ही नाद —
जय तटरक्षक ! जय भारत !

हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है, जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों ।
- वासुदेवशरण अग्रवाल

पेड़

शैलेन्द्र मिश्रा, प्रधान नाविक
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर

मैं एक पेड़ हूँ
न जाने कितनी पीढ़ी का साक्षी हूँ,
धरती की गोद में पला,
हवा की लोरी में बड़ा हुआ हूँ।

जब मैं छोटा था ,
किसी ने मिट्टी में बीज दबाया था
पानी डाला प्यार दिया
और मैं आसमान छूने चला आया था ।

मैंने देखें हैं मौसम के रंग
कभी बारिश ने भिगोया है,
कभी धूप ने तपाया,
पर हर बार मैं मुस्कुराया।

मेरी शाखाओं पर बच्चों ने झूला डाला
प्रेमियों ने अपने नाम उकेरे
पक्षियों ने घर बनाया
और थके मुसाफिरों ने साया माँगा।

मुझे गर्व है –
मैं देता हूँ प्राणवायु
शांत छाया , मीठे फल
और बदले में मांगता बस थोड़ा प्यार।

पर अब .....
कुछ कुल्हाड़ियों की गूँज मुझ तक आती है,
मेरी जड़ों तक डर समा जाता है
क्या सच में इंसान इतना कठोर है,
यह समझ नहीं आता है।

फिर भी ,
मेरी चाहत बस यही है
हर गिरा हुआ बीज
किसी नयी जिंदगी में बदल जाये।

विज्ञान के बहुत से अंगों का मूल हमारे पुरातन साहित्य में निहित है ।
- सूर्यनारायण व्यास

उम्मीद से बढ़ा चल नाविक

गोविन्द कुमार दास, अधिकारी
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर

चला चल नाविक, पहुँचा दे नैया के पार,
संघर्ष करने वालों की नहीं होती है हार।

चढ़ता ही रहे जो संकल्प की सीढ़ी पर,
मेहनत नहीं होती उसकी कभी बेकार।

कमी रह जाये अगर, कहीं निज कर्मों में ,
उस कमी में कर लीजिये बार-बार सुधार।

उम्मीद रख, साहस से बढ़ चल आगे-आगे,
हौसले से ही खुलेगा कामयाबी का द्वार।

हाथ पर हाथ रखकर मत बैठ, मेरे दोस्त,
मेहनत ही है जीवन में तरक्की का आधार।

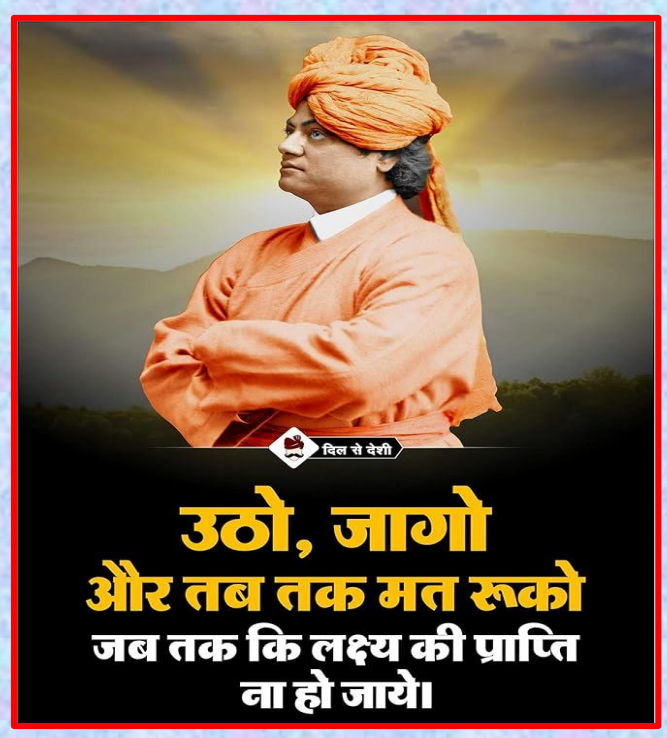

एक सैनिक की व्यथा

शैलेन्द्र मिश्रा, प्रधान नाविक
तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर

ठंडी हवाओं में, बर्फीले मोर्चे पर,
वह खड़ा है अडिग, सीमाओं के चौखट पर
घर से दूर, अपनों से जुदा
बस एक वचन निभा रहा , "मिट जाऊं पर देश रहे सदा"

माँ की आँखों में नमी है अब भी ,
पत्नी की मांग में सिन्दूर अधूरा है अब भी
बच्चे पूछे - - पापा कब आएंगे ?
पत्नी कहे -- जब तिरंगा लहरेंगे।

गोली चलती है, पर डर नहीं होता
हर सांस में बदन का असर नहीं होता
नींद आती है तो बस एक पहर में ,
सपना भी देखे तो बस एक तिरंगे के घेरे में।

शौर्य उसकी पहचान बन जाती है
पर नाम कहीं खो जाता है
वह मरता नहीं बस अमर हो जाता है
कफ़न नहीं, तिरंगा ओढ़ आता है।

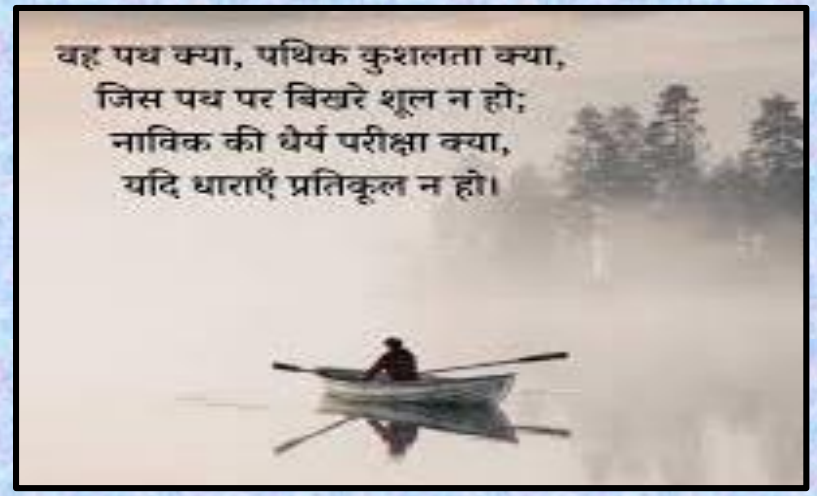

भारतीय तटरक्षक – भारत की एक समुद्री धरोहर

प्रदीप नौटियाल, स्टोरकीपर ग्रेड-II
तटरक्षक वायु सामग्री भंडार, भुवनेश्वर

नील गगन के नीचे जहाँ लहरें मचलती हैं,
वहीं तटरक्षक की आंखे हर सीमा पर चलती हैं।
ना दिन का पता, ना रात की थकान,
देश की रक्षा ही जिनका है प्रधान अभियान।

जब सागर गरजता है अपनी पूरी ताकत से,
वो खड़े रहते हैं छाती तानकर हिम्मत से।
ना पीछे हटते, ना डरते लहरों के शोर से,
भारत माता के बेटे हैं, लड़ते हम जोर से।

जहाँ हवाएँ बनती है तूफ़ान,
वहाँ तटरक्षक बनते है भगवान।
कभी बचाते मछुआरों की नाव,
कभी रोकते हैं दुश्मन का घाव।

धूप में तपकर भी मुस्कुराते हैं,
कठिन हालातों में भी डटे नजर आते हैं।
उनके क़दमों से समुद्र का दिल धड़कता है,
उनकी मौजूदगी से सागर भी निश्चिन्त रहता है।

जब कोई SOS पुकार सुनाई देती है,
उनकी नाव सबसे पहले दौड़ पड़ती है।
"सेवा और सुरक्षा" जिनका धर्म है,
हर लहर के साथ निभाते कर्म हैं।

जहाँ सीमाएं जल की होती हैं,
वहाँ ये प्रहरी तैनात होते हैं।
धरती के सिपाही सीमाओं में तैनात होते हैं,
तो ये वीर जल सीमाओं में होते हैं।

सफ़ेद वर्दी में ये जब सजे नज़र आते हैं,
तो मानो सागर पर देव उतर जाते हैं।
उनके जहाज लहरों को चीरते हुए चलते हैं,
हर मोर्चे पर विजय पताका लहराते हैं।

इनके त्याग का कोई मोल नहीं,
इनके ज़ज्बे का कोई तोल नहीं।
भारत माता इन पर गर्व करती है,
हर जन इनको नमन करते हैं।

तो सलाम उन सपूतों को जो सागर को
सँभालते हैं,
अपने जीवन से देश का मान बढ़ाते हैं।
जय हिन्द, जय तटरक्षक, जय सागर के वीर
आप ही से सुरक्षित है भारत का तट।

भाषागत विवाद राष्ट्रीय एकता के लिए घातक

गुड्डू कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक जिला मुख्यालय – 8, हल्दिया

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जहाँ की संस्कृति, धर्म, वेशभूषा, परंपराएँ और भाषाएँ इसकी पहचान हैं। यहाँ लगभग 225 से अधिक भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा अपने भीतर एक इतिहास, साहित्यिक धरोहर और सामाजिक भावनाएँ समेटे हुए है। यह विविधता भारत की सुंदरता का प्रतीक है, किंतु वर्तमान समय में भाषागत विवाद और हिंसा राष्ट्रीय एकता के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रारंभ में 14 भाषाएँ सम्मिलित थीं, जो अब बढ़कर 22 हो गई हैं। इसका उद्देश्य भाषाई विविधता को सम्मान और संरक्षण देना था। संविधान निर्माताओं का विचार था कि हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित किया जाए, परंतु किसी अन्य भाषा पर इसे थोपना उचित नहीं होगा।

भाषागत विवाद तब उत्पन्न होते हैं जब किसी भाषा को अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ माना जाने लगता है या क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा की जाती है। हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के बाद दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में विरोध देखने को मिला। इसी प्रकार, अंग्रेज़ी के अत्यधिक प्रयोग से भी स्थानीय भाषाएँ हाशिये पर चली जाती हैं। यह स्थिति क्षेत्रीय अस्मिता को बल देती है और राष्ट्रीय एकता को कमजोर करती है।

भाषागत विवादों का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह है कि लोग अपनी क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय पहचान से ऊपर रखने लगते हैं। इससे सांस्कृतिक एकता कमजोर पड़ती है और समाज में दूरी बढ़ती है। जबकि भाषा का उद्देश्य लोगों को जोड़ना है, बाँटना नहीं। हिंदी, अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाएँ सभी मिलकर भारत की पहचान बनाती हैं। हर भारतीय भाषा हमारे देश की संस्कृति का अभिन्न अंग है, और उनका संरक्षण तथा सम्मान करना हम सभी का दायित्व है।

भाषा, विवाद का नहीं, संवाद का माध्यम बने — यही भारत की सच्ची भावना है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि भारत की ताकत उसकी विविधता में निहित है। भाषा चाहे कोई भी हो, वह हमारे विचारों, संस्कृतियों और एकता की प्रतीक है। अतः भाषागत विवादों से ऊपर उठकर हमें "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना को अपनाना चाहिए।

मछुआरों का उनके परिवार के साथ पुनर्मिलन

सुरेन्द्र लकड़ा, उप समादेशक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

मछुआरों का जीवन हमेशा चुनौतियों से भरा रहता है। मछुआरे ऐसे समाज से आते हैं, जो अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को शायद ही पूरा कर पाते हैं। समुद्र में मछली पकड़ना, विशेष रूप से मानसून के मौसम के दौरान अत्यधिक कठिन है। उनकी स्थिति तब और बिगड़ जाती है, जब वे अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (आईएमबीएल) को पार करते हैं और अन्य देशों की समुद्री सेनाएं उन्हें, उल्लंघन के लिए पकड़ती हैं। एक बार अन्य देशों द्वारा पकड़े जाने के बाद, मछुआरों को महीनों या यहां तक कि वर्षों तक जेल में रखा जाता है। जिससे उनके परिवारों के जीवनयापन का कोई साधन नहीं रह जाता है ।

जब पकड़े गए मछुआरों को दो देशों के बीच आपसी कार्यवाही के बाद अन्य देशों से प्रत्यावर्तित किया जाता है, तो उनके परिवारों के लिए क्या सहायता हो सकती है । भारतीय बंदरगाह में प्रवेश करते समय प्रत्यावर्तित मछुआरों का पूरी खुशी के साथ नृत्य करना और आंखों में आंसू लिए गहरी पूर्ति की भावना के साथ जेट्टी में अपने परिवारों को गले लगाना, इस दृश्य की कल्पना ही हृदय को भाव-विभोर कर देती है।

इस तरह के परिदृश्य में, भारतीय तटरक्षक ने 08-10 दिसंबर 25 के दौरान 32 बांग्लादेशी और 47 भारतीय मछुआरों का संबंधित देशों में प्रत्यावर्तन किया। 08 दिसंबर 25 को भारतीय तटरक्षक बोर्डिंग दल, बांग्लादेश में प्रत्यावर्तन के लिए 32 बांग्लादेशी मछुआरों के साथ एक किराए की मछली पकड़ने वाली नाव पर गई। बांग्लादेशी तटरक्षक बल को आगे सौंपने के लिए 32 बांग्लादेशी मछुआरों को सागर द्वीप में भारतीय तटरक्षक पोत विजय को सौंप दिया गया था। आवश्यक प्रक्रिया के बाद, मछुआरों को बांग्लादेश के पानी में 09 दिसंबर 25 को बांग्लादेशी तटरक्षक बल को सौंप दिया गया।

पारस्परिक विनिमय समझौते के अनुसार, बांग्लादेश से बंग्लादेशी तटरक्षक बल द्वारा 47 भारतीय मछुआरों को 09 दिसंबर 25 को भारतीय तटरक्षक पोत विजय को सौंप दिया गया था। भारतीय तटरक्षक पोत विजय उन्हें भारतीय जल में ले आई और 10 दिसंबर 25 को सागर द्वीप में पूर्व भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज की बोर्डिंग टीम को सौंप दिया। बोर्डिंग टीम उन्हें एक किराए की मछली पकड़ने वाली नाव से फ्रेज़रगंज जेट्टी ले आई।

दोनों देशों के आपसी समझौतों के कारण प्रत्यावर्तन संभव हो पाया। हालांकि, समुद्री मार्ग के माध्यम से अन्य देशों से मछुआरों को लाना भारतीय तटरक्षक बल की जिम्मेदारी है। मछुआरों को वापस लाना और उनके परिवारों को सौंपना, इस तरह के कर्तव्यों में शामिल अधिकारियों और कर्मियों के लिए अपार संतुष्टि देता है । मछुआरों की सुरक्षा और समुद्र में उनकी सुरक्षा के लिए भारतीय तटरक्षक चार्टर हमेशा अत्यंत गर्व के साथ पूरा किया गया है।

“मिट्टी की खुशबू”

सुजीत कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

बिहार के एक छोटे से गाँव में राघव रहता था। उसके पिता किसान थें और माँ घर का काम संभालती थीं। खेतों की मिट्टी ही उसका खेल का मैदान था। लेकिन राघव के सपने उस मिट्टी से भी बड़े थे – वह इंजीनियर बनना चाहता था और गाँव की गलियों में बिजली लाना और सड़कों को सुंदर बनाना चाहता था।

गरीबी उसकी सबसे बड़ी चुनौती थी। उसके पिता खेतों में कड़ी मेहनत करके मुश्किल से गुज़ारा कर पाते थें। कॉलेज की फीस भरना राघव के लिए एक सपना था। लेकिन वह हार मानने वालों में से नहीं था।

दिन में स्कूल, रात में खेत और ट्यूशन के लिए पाँच किलोमीटर साइकिल से शहर जाना – यही उसकी दिनचर्या बन गई थी। गर्म दोपहरी में, जब दूसरे लड़के किसी पेड़ के नीचे आराम करतें, राघव पसीने से लथपथ मिट्टी जोतता रहता। उसकी माँ कहती, "बेटा, इतना मत थक। तेरे हिस्से की मेहनत देखकर भगवान भी द्रवित हो जाएँगे।" राघव बस मुस्कुरा देता, "अम्मा, यह मिट्टी मेरी ताकत है।"

साल बीतते गए और संघर्ष जारी रहा। वह कई बार भूखा सोया, कई बार अपमान सहा, लेकिन अपनी पढ़ाई कभी नहीं छोड़ी। आखिरकार, एक दिन उसकी मेहनत रंग लाई। जब वह इंजीनियरिंग कॉलेज से स्वर्ण पदक लेकर लौटा, तो गाँव का हर चेहरा गर्व से चमक उठा। उसके पिता की आँखों में आँसू आ गएं - "आज मिट्टी ने अपना कर्ज चुका दिया।" राघव ने अपने पिता के पैर छूकर कहा - "नहीं बाबा, ये उसी मिट्टी का आशीर्वाद है, जिसने मुझे कभी गिरने नहीं दिया।"

गाँव में पहली बार बिजली के खंभे लगे, पक्की सड़क बनी, और हर बच्चे की जुबान पर एक ही बात थी - "राघव भैया की तरह हमें भी संघर्ष करना है।"

बांग्लादेशी मछली पकड़ने वाली नौका 'मायर दोया' पकड़ी गई 13 मछुआरे गिरफ्तार

कुन्दन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज

दिनांक 17 सितम्बर 25 को भारतीय तटरक्षक बल की सक्रिय कार्यवाही के तहत बांग्लादेशी मछली पकड़ने वाली नाव 'मायर दोया' (पंजीकरण संख्या F-10371) को भारतीय जलसीमा में अवैध रूप से मछली पकड़ने और प्रतिबंधित क्षेत्र में प्रवेश करने के आरोप में पकड़ा गया है। इस नाव पर कुल 13 बांग्लादेशी मछुआरे सवार थें।

भारतीय तटरक्षक पोत अनमोल द्वारा सुबह 0605 बजे गश्ती के दौरान यह नाव सागर अक्षांश से 115 डिग्री, 66.5 मील दूरी पर (21°10.16' N, 089°07.004' E) भारतीय समुद्री क्षेत्र में पाई गई। पूछताछ और जांच में पुष्टि हुई कि नाव बिना वैध लाइसेंस के भारतीय सागरीय सीमा में मछली पकड़ रही थी तथा मछली पकड़ने के उपकरणों को नियम के अनुसार नौभरण नहीं किया गया था।

इस संबंध में नाव तथा चालक दल पर Maritime Zones of India Act, 1981 की धारा 3/10 और 7/14 के तहत मामला दर्ज किया गया । नाव को सुरक्षा के साथ फ्रेज़रगंज बंदरगाह लाया गया, जहाँ यह 1945 बजे (17 सितम्बर 25) पहुंची। इसके बाद 2345 बजे फ्रेज़रगंज कोस्टल पुलिस स्टेशन में विधिवत सुपूर्द की गई और एफ आई आर दर्ज कर ली गई ।

भारतीय तटरक्षक बल की इस त्वरित व सतर्क कार्रवाई से अवैध घुसपैठ, संसाधनों की चोरी और राष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता एक बार फिर सिद्ध हुई है। समुद्री सीमाओं की निगरानी और राष्ट्रहित की सुरक्षा में तटरक्षक बल लगातार अग्रिम पंक्ति में कार्यरत है।

प्रकृति का जीवन संदेश

एकता गुप्ता, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

सुनो,
क्या कहती है ?
वो हवा,
वो पत्तों की सरसराहट,
वो फूलों की खुशबू,
शाम तक मुरझाना है जानते हुए भी
वो फूलों का खिलना ।

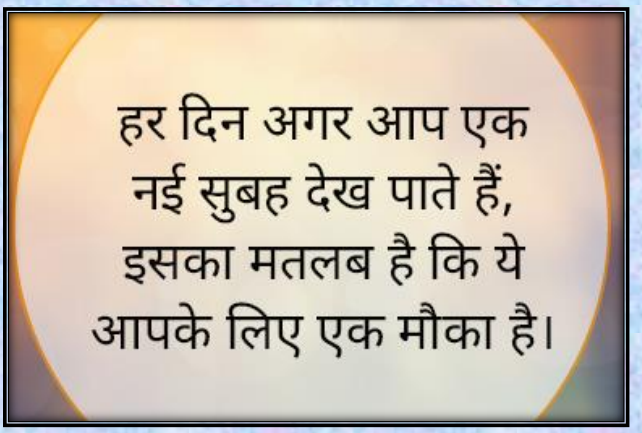

सुनो
क्या कहता है?
वो सूरज,
वो ढलते-ढलते भी उसका लालिमा दे जाना ।
वो एक ही गगन तले, सबको बसाए रखना ।
वो बादलों का इस नगर से उस नगर चलना,
वो हवाओं में कहीं बारिश की आहट देना,
तो कहीं झूम कर सब कुछ न्यौछावर कर देना ।

सुनो,
वो नदियों का बेतहाशा पर्वतों पर दौड़ना,
और फिर समंदर में मिल जाना ।
वो किताबों के पन्नों का पलटना,
वो बर्तनों के टकराने की धुन,
वो मासूम से बच्चे की खिलखिलाहट की गूंज ।
संसार के कण-कण में गूँजता जीवन-संदेश ।

इम्तिहान

धर्मेंद्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

उम्र गुज़रेगी इम्तिहान में क्या,
जिंदगी खुद एक इम्तिहान है।
हर कदम पर सवाल होते हैं,
हर मोड़ पर नई उड़ान है।

कभी आंधियाँ रोक लेती हैं रास्ता,
तो कभी तूफ़ानों में भी जहान है।
जो मुस्कुरा के चल दे कांटों पर,
उसके लिए ही गुलों की पहचान है।

मत पूछिए किस हाल में हैं लोग,
हर किसी की अपनी एक दास्तान है।
उम्र गुज़रेगी बस सिखने में,
क्योंकि यही असली पहचान है।

सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है,
आपके अंदर उत्साह, संघर्ष की इच्छा और सहनशीलता ।

मतदान का महत्व

अर्पित कुमार, यांत्रिक (ए एल)
भारतीय तटरक्षक वायु परिक्षेत्र (भुवनेश्वर)

मतदान किसी भी लोकतांत्रिक देश की आत्मा है। यह नागरिकों को अपनी सरकार चुनने और देश के भविष्य निर्माण/ निर्धारण करने का अधिकार देता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में मतदान केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि एक कर्तव्य भी है।

मतदान का महत्व निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है –

1. **लोकतंत्र की नींव**. लोकतंत्र में जनता सर्वोच्च होती है। मतदान के माध्यम से ही जनता अपनी शक्ति का प्रयोग करती है और अपने पसंद की सरकार बनाती है।

2. **नागरिक अधिकार का उपयोग.** संविधान में प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार दिया गया है। मतदान करना अपने इस अधिकार का सम्मान करना है।

3. **अच्छी सरकार का चयन**. यदि नागरिक सोच-समझकर मतदान करते हैं, तो वे ईमानदार और योग्य नेताओं को चुन सकते हैं, जो देश के विकास में योगदान दें।

4. **भ्रष्टाचार पर नियंत्रण**. जब जनता जागरूक होकर मतदान करती है, तो नेताओं पर जिम्मेदारी का दबाव बढ़ता है और वे जनता के प्रति उत्तरदायी रहते हैं।

5. **देश की प्रगति**. सही नेतृत्व से ही देश का विकास संभव है, और सही नेतृत्व का चयन मतदान से ही होता है।

6. **युवा पीढ़ी की भूमिका**. युवाओं को यह समझना चाहिए कि उनका हर वोट महत्वपूर्ण है। उनकी भागीदारी ही देश की दिशा और दशा तय करती है।

निष्कर्ष. मतदान केवल एक दिन का कार्य नहीं है, बल्कि यह देश के भविष्य को आकार देने की प्रक्रिया है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह निर्भय, निष्पक्ष और सोच-समझकर मतदान करें, क्योंकि आपका एक वोट देश के भविष्य को बदल सकता है।

मतदान लोकतंत्र की रीढ़ है। हमें अपने अधिकार और कर्तव्य दोनों का पालन करते हुए सोच-समझकर मतदान करना चाहिए, क्योकि "सच्चा नागरिक वही है, जो मतदान करता है।"

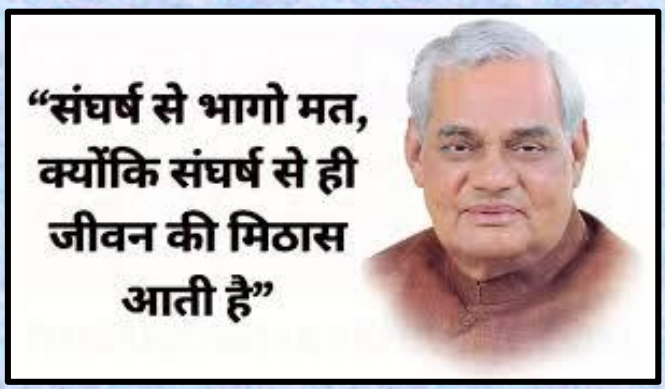

हालात

धर्मेंद्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)

थोड़ा सोचूं फिर एक बात लिखूं,
जज़्बात लिखूं या हालात लिखूं..

तेरे साथ को अपने साथ लिखूं,
या मेरे हाथों में तेरा हाथ लिखूं..

तुझे देखूं फिर तेरी बात लिखूं,
तारीफ लिखूं या फरियाद लिखूं...

तेरे पीछे खुद को आबाद लिखूं,
या तन्हाई में खुद को बर्बाद लिखूं...

तुझे दिन या खुद को रात लिखूं,
बता आज कौन-सी बात लिखूं.. ?

गुमनाम

स्मित कुमार, उत्तम यांत्रिक
भारतीय तटरक्षक पोत विजय

कहीं गुमनाम नाम की तलाश करूँ मैं,
गुमनामी में जी रहे लोगों की तलाश करूँ मैं
जो खो चुके हैं इतिहास के पन्नों में
उनकी पहचान करूँ मैं
जो देश की खातिर मर मिटें है उनकी बात करूँ मैं
जो देश को चला रहे गुमनाम बनकर, उनकी बात करूँ मैं
भीड़ का हिस्सा भले ही हों वो
लेकिन उसकी अलग ही पहचान करूँ मैं
याद आए या न आए, उनके रक्त की कुर्बानी
लेकिन उनके जज़्बे की अलग ही पहचान करूँ मैं
जिंदगी के उन खतों में उनका नाम भले ही ना हो
फिर भी कफ़न की जगह तिरंगा की मांग करूँ मैं
गुनाह तो नहीं किया है, अपने राष्ट्र के खातिर
कहीं गुमनाम बनकर
नहीं चाहिए कोई पहचान, नहीं चाहिए कोई नाम और इनाम
भले ही भीड़ का हिस्सा बना रहूँ मैं
बस एक तमन्ना है, सिर्फ मेरा तिरंगा रहना चाहिए ।

नीला सागर, जीवन का आधार

अशोक कुमार, सहायक इंजीनियर
तटरक्षक मरम्मत एवं निर्माण दल, कोलकाता

नीले गगन का दर्पण है सागर,
लहरों में बसी अनगिनत कहानियाँ।
कभी शांत, कभी उग्र स्वरूप में,
सिखाता है जीवन की निशानियाँ।
मूंगे, शैवाल और मछलियों का संसार,
हर बूँद में छुपा है जीवन अपार।
व्हेल की गूँज, डॉल्फ़िन की किलकारी,
सब जीव पाते हैं प्रकृति का प्यार।
इसकी गोद में मछलियाँ नाचें,
शंख, सीप और मोती सोएँ।
कोरल अपने रंगीन गलियों में,
अनगिनत सपने रोज़ संजोएँ।
परन्तु.....
आज उसी सागर की आँखों में,
दर्द की लहरें तैर रही हैं।
प्लास्टिक, ज़हर और लालच के बोझ तले,
उसकी सांसें धीरे-धीरे घुट रही हैं।
मानव की लालच भरी राह,
सागर पर भारी पड़ती जाए।
प्लास्टिक, तेल, ज़हरीला कचरा,
इसकी गोद को मैला बनाए।
रोते सागर बोले धीमे स्वर में,
मत करो मुझ पर अत्याचार।
मैं ही देता जीवन सबको,
मैं ही धरती का श्रृंगार।
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं
सागर को फिर से मुस्कान दिलाएं।
स्वच्छ जल, सुरक्षित जीवन का संकल्प लेकर,
आने वाली पीढ़ी का भविष्य सजाएं।

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़ा समारोह

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) में दिनांक 14 - 30 सितंबर 25 तक कोलकाता स्थित अधीनस्थ इकाइयों के साथ मिलकर संयुक्त रुप से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसके दौरान कई कार्यक्रमों/ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया ।

14 - 30 सितंबर 25 तक तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर में हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान स्वरचित कविता पाठ, निबंध लेखन, श्रुति लेखन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

विश्व पर्यावरण दिवस

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) एवं अधीनस्थ इकाइयों में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया एवं विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) एवं अधीनस्थ इकाइयों में 21 जून 2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 मनाया गया ।

नशा मुक्त भारत
अभियान पर शपथ

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) एवं अधीनस्थ इकाइयों में 'नशा मुक्त भारत अभियान' के उपलक्ष्य में शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया।

हर घर तिरंगा अभियान

"हर घर तिरंगा" अभियान के एक भाग के रूप में, तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, कोलकाता और तटरक्षक अवस्थान कोलकाता द्वारा 02 - 15 अगस्त 2025 तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय ध्वज और स्वतंत्रता दिवस के बारे में छात्रों में जागरूकता बढ़ाने के लिए तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, भुवनेश्वर द्वारा 07 अगस्त 25 को केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 6, पोखरिपुट के छात्रों को "हर घर तिरंगा" विषय पर एक व्याख्यान दिया गया। विभिन्न आयु वर्ग के कुल 65 छात्रों ने इस व्याख्यान में भाग लिया। इसके साथ ही तिरंगा वॉकथॉन का आयोजन किया गया

तटरक्षक पोत अदम्य का जलावतरण

श्री सत्यजीत मोहंती आईआरएस संयुक्त सचिव (ए एफ और नीति) द्वारा 19 सितंबर 2025 को पारादीप में तटरक्षक पोत अदम्य का कमीशन किया गया।

ब्रह्म कुमारी का दौरा

आध्यात्मिक कल्याण के लिए तटरक्षक वायु सामग्री भंडार (भुवनेश्वर) द्वारा ब्रह्म कुमारी का सत्र आयोजित किया गया। ब्रह्म कुमारी से आए प्रतिनिधि द्वारा मनोवैज्ञानिक और मानसिक कल्याण के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए व्याख्यान दिया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2025

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) द्वारा 27 अक्टूबर से 02 नवंबर 2025 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025' मनाया गया। इस वर्ष का विषय - "राष्ट्र की समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति" था । सभी अधिकारियों, सैन्य और असैन्य कार्मिकों द्वारा सत्यनिष्ठा की शपथ ली गई।

एकता दिवस समारोह

एकता दिवस के उपलक्ष्य में तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) एवं अधीनस्थ इकाइयों में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया । तटरक्षक वायु परिक्षेत्र (भुवनेश्वर) एवं तटरक्षक अवस्थान फ्रेज़रगंज द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के लिए रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया।

द्विपक्षीय क्रॉस कंट्री

09 जून 25 को तटरक्षक जिला मुख्यालय- 8, हल्दिया द्वारा असम राइफल्स के कर्मियों के साथ द्विपक्षीय क्रॉस कंट्री का आयोजन किया गया।

इसके साथ ही तटरक्षक जिला मुख्यालय- 8, हल्दिया द्वारा 10 जून 25 को असम राइफल्स के कर्मियों के साथ आईओसीएल फुटबॉल मैदान में द्विपक्षीय फुटबॉल चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) द्वारा 29 अगस्त 25 को तटरक्षक वायु परिक्षेत्र, कोलकाता में एवं 18 नवंबर 25 को तटरक्षक वायु सामग्री भंडार, भुवनेश्वर में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में राजभाषा संबंधी आदेश/अधिनियम/नियम, हिंदी प्रगति रिपोर्ट भरते समय आंकड़ों का संकलन एवं आंकड़ों का अभिलेख, राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं नकद पुरस्कार योजना तथा राजभाषा विभाग के आई टी टूल्स के विषय में विस्तार से बताया गया।

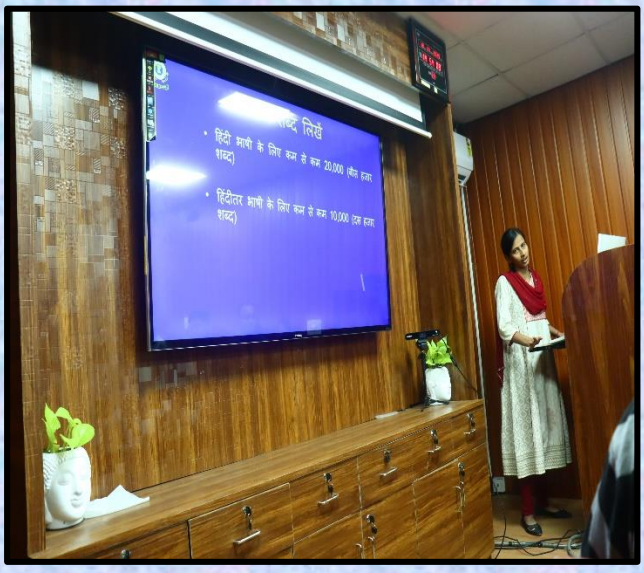

क्षेत्रीय पुरस्कार समारोह

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.) द्वारा 06 फरवरी 26 को तटरक्षक आवासीय परिक्षेत्र, मानिकतल्ला में क्षेत्रीय पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें कोलकाता स्थित तटरक्षक के अधिकारियों, सैन्य, असैन्य कार्मिक तथा उनके परिवार एवं तटरक्षक के सेवानिवृत्त कर्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आदरणीय महानिरीक्षक इकबाल सिंह चौहान, राष्ट्रपति तटरक्षक पदक, तटरक्षक पदक, कमांडर, तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) थें । इस कार्यक्रम के दौरान अधीनस्थ यूनिट, पोत एवं अनुभाग को वित्त वर्ष 2024-25 हेतु राजभाषा राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया गया |

तटरक्षक क्षेत्र (उ.पू.) की झलकियाँ

प्रतिष्ठा

VIGILANCE
Awareness Week 2019
COAST GUARD TECHNICAL LIAISON OFFICE

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.)
कोलकाता

QUARTERS NO. 7 COAST GUARD DISTRICT (ODISHA)

CG WEEK CELEBRATION 2025
QUIZ COMPETITION 2025

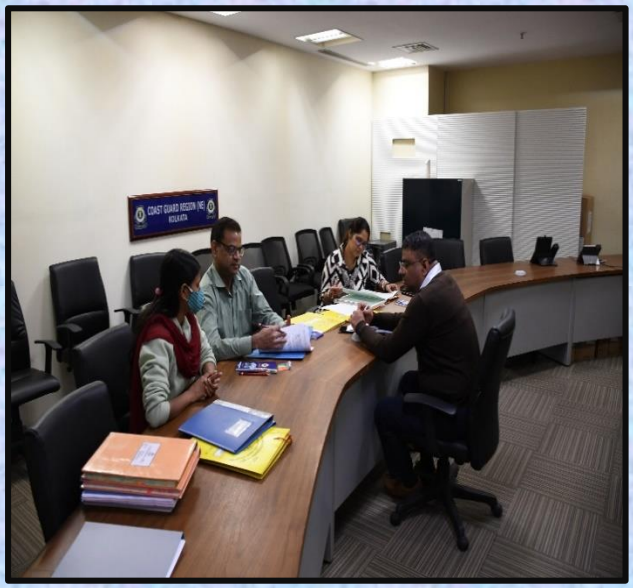

50
स्थापना दिवस
2026

भारतीय तटरक्षक
COAST GUARD

COAST GUARD

ICG

COAST GUARD

REGIONAL AWARD CEREMONY
हिंदी पुरस्कार

REGIONAL AWARD CEREMONY
हिंदी पुरस्कार
राजभाषा पुरस्कार, आंतरिक अनुभाग – क्षेत्रीय तकनीकी

SECURITY VESSEL

CAMP HOSHIYAR

SELF HELP

राजभाषा समारोह

भारतीय राजभाषा सम्मेलन
પાંચમું અખિલ ભારતીય રાજભાષા સંમેલ
महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात
14-15 सितंबर/ સપ્ટેમ્બર, 2025

तटरक्षक क्षेत्रीय मुख्यालय (उ.पू.), कोलकाता